Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की भूमिका – एक सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन

डॉ. भावना भटनागर*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) पी.एम.सी.ओ.ई., शासकीय स्नानतकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध परंपराओं में से एक है जिसमें दर्शन विज्ञान साहित्य कला और आध्यात्मिकता का समावेश है। इस परंपरा के विकास और संरक्षण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं ने ज्ञान के अर्जन में योगदान दिया है प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की भूमिका का ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाएं सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है , जैसे आधुनिक काल में सावित्रीबाई फुले जैसे उदाहरण देखने को मिलते हैं।

शब्द कुंजी – परंपरा, वैदिक काल, आधुनिक काल, आर्थिक, ऐतिहासिक।

प्रस्तावना – भारतीय ज्ञान परंपरा एक विस्तृत क्षेत्र है जिसमें वेद ,उपनिषद, पुराण, दर्शन, आयुर्वेदिक, गध साहित्य, लोक ज्ञान शामिल है। इस परंपरा के निर्माण में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है लेकिन अगर इतिहास में देखें तो इन्हें पर्याप्त स्थान नहीं मिला है। भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं का आर्थिक क्षेत्र में योगदान महत्वपूर्ण रहा है, वे ना केवल घरेलू अर्थव्यवस्था बल्कि कृषि एवं दस्तकारी में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

शोध के उद्देश्य :

1. भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
2. विभिन्न कालखंड में महिलाओं की योगदान का विश्लेषण करना।
3. समाज में ज्ञान के प्रचार में महिलाओं की भूमिका को समझना एवं दिखाना।
4. आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को समझना।

शोध पद्धति – यह शोध पत्र मुख्यता द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है जिसमें प्राचीन ग्रंथ शोध पत्र पुस्तक और ऐतिहासिक ग्रन्थ शामिल है।

वैदिक काल में महिलाओं की भूमिका – वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत ही सम्मानीय एवं प्रगतिशील थी उन्हें सिक्षा, विवाह,और धार्मिक कार्यों में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे ।स्त्रीयांअर्धांगिनी के रूप में परिवार की स्वामी थी तो यज्ञों में अनिवार्य रूप से अपने पति की सहभागी होती थी ।आर्थिक गतिविधियों जैसे गायन सिलाई कढ़ाई और कृषि के कार्यों में सक्रिय योगदान देती थी। वैदिक काल में स्त्रियों की सामाजिक आर्थिक योगदान को हम देख सकते हैं कि महिलाओं उपनयन संस्कार और शिक्षा का पूर्ण अधिकार था लोपामुद्रा,अपाला और सिकता जैसी विदुषी महिलाओं नेवेदों की रचनाओं में मंत्रों की रचना की। दार्शनिक विमर्श में उपनिषद काल में गार्गी ने याज्ञवलक्य के साथ शास्त्रार्थ में भाग लिया जो उनके उच्च बौद्धिक स्तर को दर्शाता है। वैदिक काल में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में योगदान को अगर देखे तो यह देखने में आया कि वे कृषि कार्य, गायन, सिलाई कढ़ाई और वस्त्र निर्माण में अच्छा योगदान देती थी उन्हें घर के प्रबंधन में गृहणी के साथ–साथ संपत्ति पर भी अधिकार था।

वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था ,वे वेदों का अध्ययन करती थी दार्शनिक चर्चा में भाग लेती थी। वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार था वेदों का अध्ययन करती थी और दार्शनिक चर्चाओं में भाग लेती थी इस काल में महत्वपूर्ण महिलाएं जैसे गार्गी, मैत्री ऐसी विदूषी रही है। जिन्होंने उसे समय शिक्षा के क्षेत्र में और आर्थिक क्षेत्र में अपना नाम कमाया है। उत्तर वैदिक काल में सामाजिक संरचनाओं के कारण महिलाओं की स्थिति में कुछ गिरावट आई लेकिन उन्होंने भक्ति आंदोलन के माध्यम से ज्ञान और आध्यात्मिकता को जीवित रखा उत्तार वैदिक काल में पुत्री को दुखों का कारण और पुत्र को परिवार का रक्षक माने जाने लगा।

मध्यकालीन काल– मध्यकाल में भारतीय महिलाओं का योगदान मिश्रित था पितृसत्तात्मक समाज और पर्दा प्रथा जैसी जैसी बुराइयों के बावजूद या रूढ़ियों के बावजूद महिलाओं ने कृषि कताई बुनाई और व्यापार जैसे क्षेत्रों में आर्थिक रूप से सक्रिय भूमिका निभाई। सामाजिक रूप से उच्च वर्ग की महिलाओं को सम्मान व शिक्षा प्राप्त थी। महिलाओं ने घर परिवार संभाल कर अर्थव्यवस्था को सहारा दिया। जौहर प्रथा राजपूत शासको द्वारा अपनाई जाने वाली एक वीरतापूर्ण लेकिन दुखद परंपरा थी। महिलाएं जिसमें दुश्मनों से अपनी पवित्रता और सम्मान की रक्षा के के लिए सामूहिक रूप से अग्नि कुंड में कूंद कर अपने प्राण त्याग देती थी।

आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में मध्यकाल में महिलाये कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में खेती के कार्य जैसे कटाई निराई पशुपालन और दुग्ध उत्पादन में पुरुषों के साथ सहयोग करतीं थी। कुटीर उद्योग ग्रामीण और शहरी महिला सूत काटने, कपड़े बनाने और कढ़ाई का काम में लगी रहती थी वह घरेलू कार्यों के साथ कटाई के माध्यम से परिवार की आय में वृद्धि करती थी।अनेक महिलाएं जैसे छोटी–मोटी स्थानीय बाजारों में सामान बेचने और दस्तकारी में शामिल थी कि विधवा महिलाएं अक्सर अपने पतियों की

विरासत को संभालने की जिम्मेदारी उठाती थी । पर्दा प्रथा और घर की चार दिवारी में रहने के कारण उच्च मध्यम वर्ग की महिलाएं आर्थिक गतिविधि में सीधे भाग नहींले पाती थी ।ग्रामीण और श्रमिक एवंकी निम्न वर्ग की महिलाएं खेती पशुपालन और दस्तकारी जैसी जैसे बुनाई-कढ़ाई में पुरुषों की मदद करती थी । विधवाओं को संपत्ति के अधिकारों से वंचित किया जाता है विधवा पति के रिश्तेदारों का निर्भररहती थी मध्यकाल में भारतीय महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई जहाँपित्र सत्तात्मक समाज में पर्दा प्रथा, सती प्रथा और जौहर, बाल विवाह जैसे बुरी प्रथाएं प्रचलन में थी । हालांकि उच्च वर्ग की महिलाओं की शिक्षा , प्रशासन में भागीदारी थी। वही रजिया सुल्तान जैसी महिला दिल्ली सल्तनत की रानी बनी और रानी दुर्गावती गोंडवाना जैसी क्षेत्र की महारानी बनी । यह दोनों ही महिला सशक्तिकरण की मिसाल बन गई ।मध्यकाल में आर्थिक स्थिति कोदेखते हुए कहा जा सकता है कि महिलाओं को संपत्ति पर बहुत कम अधिकार थे और वे आर्थिक रूप से पुरुषों, पिता या पति पर या पुत्र पर निर्भर रहती थी । कृषि और कुटीर उोग ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं खेती पशुपालन और कटाई और बुनाई जैसे कुटीर उोग में अपना विशेष रूप से योगदान देती थी दासी प्रथा संपन्न परिवार में व्याप्त थी।

आधुनिक काल – आधुनिक युग में महिलाओं ने शिक्षा समाज सुधार और विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित आधुनिक काल में महिलाओं ने आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक सुधार में अभूतपूर्ण योगदान दिया है शिक्षा और कानून सुधारो के माध्यम से सावित्रीबाई फुले पंडित रमाबाई ने शिक्षा की नींव रखी जबकि वर्तमान में महिलाएं नेतृत्व के साथ ही रूढ़ियों को तोड़कर सामाजिक सुधार का सामनाकर रही हैं। उन्होंने बाल विवाह दहेज प्रथा और रूढ़िवादी धारणाओं के खिलाफ लड़करसमाज में समानता स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ रही है ।आधुनिक युग में महिलाओं ने शिक्षा समाज सुधार और विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित आधुनिक काल में महिलाओं ने आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक सुधार में अभूतपूर्ण योगदान दिया है शिक्षा और कानून सुधारो के माध्यम से सावित्रीबाई फुले पंडित रमाबाई ने शिक्षा की नींव रखी जबकि वर्तमान में महिलाएं नेतृत्व के साथ ही रूढ़ियों को तोड़कर सामाजिक सुधार का सामनाकर रही हैं। उन्होंने बाल विवाह दहेज प्रथा और रूढ़िवादी धारणाओं के खिलाफ लड़करसमाज में समानता स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ रही है ।आर्थिक क्षेत्र में आधुनिक काल में महिलाएं न केवल नौकरी कर रही है बल्कि नौकरी देने वाली भी हो गई है ,स्टार्टअप-इको सिस्टम में प्रमुख भूमिका निभा रही है।

विश्लेषण – इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिलाओं ने हर काल में भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने में योगदान दिया है लेकिन सामाजिक परम्पराओं कारण उनकी भूमिका कभी-कभी सीमित रही है। फिर भी उन्होंने अपनी उपस्थिति बनाए रखी है । आर्थिक क्षेत्र में महिलाएं वैदिक काल से आधुनिक काल तक अपना योगदान देती है । यह सत्य है की वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में बहुत परिवर्तन आया है फिर भी कई क्षेत्रो में आजभी महिलाएं पुरुष प्रधान मानसिकता से पीड़ित है ।

निष्कर्ष– भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी को शक्ति का रूप माना गया है । भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है । उन्होंने ज्ञान के सृजन संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है वर्तमान समय से लेकर प्राचीन समय से जो भी उनके योगदान को देखा जाए तो तो देखने में आता है कि महिलाएं आधुनिक काल में अपना वह रूप दिखा रही है जो हर महिला अपने सपने में देखती है । उनके योगदान को अगर मान्यता दी जाएगी तो महिला सभी क्षेत्रो में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है । इनकीशिक्षा को यदिऔर प्रोत्साहित किया जाएगा तो महिला अपने पैरों पर खड़े होकर अपने समाज का अपने देश का अपने परिवार का नाम रोशन करेगी।

सुझाव – महिलाओं के विकास हेतु सकारात्मक आर्थिक और सामाजिक नीतियों का निर्माण करना चाहिए। पुरुषों के साथ महिलाओं को राजनितिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रों में वैधानिक एवं समान अवसर प्रदान करना चाहिए। देश के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं को समान अधिकार देना चाहिए । महिलाओं के योगदान पर अधिक शोध किया जाए औरशिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया जाए । ऐतिहासिक ग्रंथो में महिलाओं की योगदान को शामिल किया जाए और महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढाया जायेतो वेदेश के हर क्षेत्र में अपना कौशल दिखाएंगी और देश का नाम रोशन करेंगी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. वेद उपनिषद , भक्ति साहित्य , भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन पर आधारित पुस्तकें महिला से संबंधित शोध पत्र आधुनिक भारतीय इतिहास की पुस्तकें।

****